

साइंटिफिक एक्सप्लेनेशन ऑफ क्वांटम, रियलिटी ऑफ ह्यूमन बॉडी ऑन बेसिस ऑफ कर्मा एंड रिलेशन।

देखिए जब हम कोई जन्म लेकर आता है। तो हमारी जो यह जीवन की सायकल चल रही है। इसमें हम यदि ध्यान से देखें। तो हम एक परिवार में आते हैं। हम कोई काम करते हैं। यह भगवान की दुनिया में हम यह कहते हैं। देखो यह कर्म था या यह भी एक कार्मिक अकाउंट है। हम ट्रेन में सफर कर रहे हैं। किसी से हम बात करेंगे या नहीं करेंगे। यदि कोई कार्मिक अकाउंट नहीं है, तो नहीं करेंगे। यदि इसको हम सोच कर देखें। तो कैसे ऐसे होता होगा। देखिए हमने कहा कि हम क्या हैं। ओरिजनली हम एक

सबअटॉमिक बिन्ग हैं और हमने अपने आप को एक इनर्जी बिन्ग बना लिया। मान लीजिए हमने किसी की बहुत निन्दा की। किसी को बहुत तकलीफ देते हुए आए। तो हमने अपना कार्मिक अकाउंट किस व्यक्ति के साथ क्रिएट किया। जिसको हमने बहुत तकलीफ दी। तो अगले जन्म में वो ही, जिसके साथ हमने बहुत इनर्जी एक्सचेंज की। जिसको बार-बार याद करके हमने किया है। वही हमारे साथ, कहां आएगा। सबसे पहले हमारे घर में ही आएगा। क्यों आएगा। क्योंकि घर में आने वाले व्यक्ति के साथ ही हम ज्यादा समय रहते हैं। बाहर तो हम कुछ काम करने के लिए जाते हैं। वापिस आ जाते हैं। तो एक ऑबियस बात है। वो इनर्जी का बिन्ग आप के घर पर ही आएगा। अब वो आप को सुख दे रहा है या दुख दे रहा है। यह डिपेंड करता है कि पास्ट में आप ने उसको सुख दिया था या दुख दिया था। आप ने जब उसके लिए कुछ बुरा सोचा था। कुछ बुरा किया था। तो आप ने उसके शरीर में उस इनर्जी के डेफिसिट को आप ने अपने कर्म से ही क्रिएट किया था। तो आज आप उसके इनर्जी डेफिसिट को अपना अच्छा कर्म करके ही डेफिसिट को पूरा करोगे। तो कहते हैं ना। भगवान क्या कहता है। यदि आपने तकलीफ दी थी। तो उसका ऋण कैसे उतारोगे। उसको अपना प्यार देकर। उसकी सेवा करके। तो आप यदि कहीं समझते हैं कि आपको जीवन के पथ पर ऐसे लोग घर में, परिवार में मिल रहे हैं। आप को उनकी बहुत सेवा करनी पड़ रही है। तो आप समझ लेना कि यह आप का कोई पुराने जमाने का ऋण है। तो आप को कोई पास्ट लाइफ को देखने की जरूरत नहीं है। आप को अपने फ्यूचर को देखने की जरूरत भी नहीं है। इस तरह से यदि आप अपने आप को देखना शुरू कर दोगे। तो उसी मोमेंट से जागृत हो जाओगे। आप को असलियत में क्या जरूरत है। मतलब यदि हम अपने पास्ट के इवेंट्स को जान भी लेंगे कि आज मेरे साथ जो भी जिंदगी में हो रहा है। वो इस वजह से हो रहा है। तो क्या होगा। तो हम वापिस अपने आप को, उसी। सोचेंगे हम फिर कुछ ना कुछ, उसके बारे में या फ्यूचर का हम कुछ जान लेंगे। तो फिर से हम सोचेंगे। सोचना भी एक कर्म है और जो कर्म करेंगे। वो ही इनर्जी हमारे अंदर फिर आएगी। तो वैटर है, हम ना सोचें और जो कुछ भी हमारे साथ जीवन में हो रहा है। हम उसका फल मतलब उसकी इनर्जी को ट्रांसफॉर्म कर दें। अपनी इनर्जी को भी ट्रांसफॉर्म करें। सामने वाले की इनर्जी को भी ट्रांसफॉर्म करें और आज हमें एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि आज हमारे चारों ओर बहुत लॉ फ्रीक्वेंसी वाइब्रेशंस हैं। जो युग पर युग बदलते चले गए। सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग। तो यहां पर होता क्या गया कि हाई इनर्जी फील्ड्स - लॉ इनर्जी फील्ड्स में बदलती चली गईं।

तो आज हम पांच तत्त्वों में चारों तरफ से एक लॉ इनर्जी फील्ड में घिरे हुए हैं। हाई इनर्जी फील्ड्स भी हैं। लेकिन इंसान जैसे कर्म करते जा रहा है। वो उसी इनर्जी को एक्सचेंज करता जा रहा है और नेगेटिव इनर्जी ही परफैक्ट होती चली जा रही है। इसी को ही आप देखेंगे तो लॉ इनर्जी फील्ड्स ज्यादा हैं। हाई इनर्जी फील्ड्स कम हो गईं। तो हाई इनर्जी फील्ड्स को जिस दिन हम लॉ इनर्जी फील्ड्स से रिप्लेस कर देंगे। उस दिन से दुनिया फिर से अच्छी हो जाएगी। पर आज हमारी जो भी कंडीशन है। हां, मान लीजिए हमें हर बात पर गुस्सा भी आता है। तो उसका भी एक रूप है। हम तुरंत ही क्षमा मांग लें और हम जो कहते हैं ना कि हमें कर्म योग की स्टेट में रहना चाहिए। कर्म योगी स्टेट का बहुत बड़ा फायदा है और हम भगवान को, अपने आप को हर पल, अपने हर कर्म को भगवान को समर्पित कर दें। भगवान तो कहता है कि आप मुझे हर समय याद करो। क्यों, क्योंकि जब हम भगवान को याद करेंगे। वो जो हम याद कर रहे हैं ना। यह कर्म है। कर्म करेंगे, तो जिसको हम याद करेंगे। उसके साथ हमारी इनर्जी एक्सचेंज होगी। तो हमारे भगवान की इनर्जी जब आएगी। वो तो हाईएस्ट इनर्जी आ रही है। वो तो आप के आत्मस्वरूप के गुणों को जागृत करेगी। आप को यदि हाई इनर्जी बिंग्स बनना है। तो आपको क्या करना है। अपने आत्मस्वरूप में जागृत होना है और स्थितप्रज्ञ अवस्था जो हम कहते हैं ना, आत्मा की। वो भी कुछ नहीं है। वो भी क्या है कि आप के पांचों तत्व जो हैं। उनकी बैलेंस हाई इनर्जी स्टेट है, स्थितप्रज्ञ अवस्था आत्मा की और हमें एक ओर बात ध्यान रखनी

चाहिए। कोई भी गुण यदि एक्सेस में होता है। तो वो भी अवगुण बन जाता है। तो हमें यदि पॉजिटिव चार्ज को नेगेटिव चार्ज, जब एक-दूसरे के इकुअल होंगे। तभी वो न्यूटल स्टेट अटेंड करेंगे। यदि पॉजिटिव एक्सेस में नेगेटिव एक्सेस तो कभी भी इक्युलिब्रियम कभी भी नहीं करेंगे। तो इसी तरीके से

हमें यह समझना चाहिए कि हमारे जो इक्युलिब्रियम स्टेट है। वो तभी होगी। जब हम अपने बैलेंस स्टेट में रहेंगे और यह बैलेंस स्टेट कुछ नहीं है। हमें अपने पांच तत्त्वों को ही बैलेंस करना है और इन पांच तत्त्वों को हम कैसे बैलेंस कर सकते हैं। एक पॉजिटिव इनर्जी को अपने हर कर्म से गैर करके। तो आज हमारे जीवन में जो कुछ भी होता है। तो हमें यह याद रखना है कि वो हमारे कर्मों के कारण ही हो रहा है और कर्मों के कारण ही, हम कर्मों से क्या अर्जित कर रहे हैं। इनर्जी अर्जित कर रहे हैं और उस इनर्जी से हम एक इनर्जी बिन्ग बन रहे हैं। तो आज हमारे साथ जो भी रिश्ते हैं। हमें कुछ अच्छा या बुरा लग रहा है। वो भी आप के सामने जिस रूप में भी खड़ा है। माता-पिता, भाई-बहन, कोई रिश्तेदार, कोई दोस्त। वो कुछ नहीं हैं। वो भी एक इनर्जी बिन्ग हैं। जब से हमने जन्म लिया। तब से लेकर आज तक हमने कुछ इनर्जी एक्सचेंज की है, एक-दूसरे के साथ। वो ही इनर्जी हमें वापिस करनी है। तो आज हम क्या करते हैं। हम उल्टा करने लगते हैं। मान लीजिए कोई हमें घर में अच्छा नहीं लगता। हमारी किसी से नहीं बनती। तो हम उसको ओर बुरा बोलना शुरू कर देते हैं, ओर बुरा बोलना शुरू कर देते हैं और कभी भी आप ध्यान से देखना। वो चीज छोटी सी होती है। कुछ दिनों बाद वो बात बहुत बड़ी बन जाती है, ओर बड़ी बन जाती है। क्यों, क्योंकि जब आप उसके लिए कुछ भी बुरा सोच रहे हो या बुरा देख रहे हो या उसके साथ बुरा करने लगते हो। तो वो लॉ इनर्जी फील्ड, लॉ इनर्जी फील्ड उसको भी देते जा रहे हो और खुद भी लेते जा रहे हो। कर्म कर रहे हो ना। लेते जा रहे हो...। तो ना इंप्रूव हुआ, ना आप इंप्रूव हुए और थोड़े दिन बाद आप अलग-अलग हो जाते हो और आज यही हमारे युग में हो रहा है। तो हमें करना क्या है। हमें उसे ट्रांसफार्म करना है। मान लीजिए गलती हो गई। तो हमें क्या करना है। हमें उस समय विवेक से अपनी आत्मा की सहनशीलता के गुण को निखारना है। यह चॉइस हमारे पास हर समय अवेलेबल है। सामने वाला हमें गाली भी दे रहा है। ठीक है, वो लॉ इनर्जी बिन्ग है। आज वो अपनी वाणी से लॉ इनर्जी वाइब्रेशंस को ही क्रिएट करके उसकी भाषा ही स्पोज अब्यूजिब हो गई। हमें उसकी ओर नहीं देखना। आज वो हो गई। हमें यह ध्यान में रखना है। क्योंकि आज वो लॉ इनर्जी स्टेट में है। तो हम उसे रोक नहीं सकते।

क्योंकि उसे अच्छी बात आएगी नहीं समझ में। अच्छी बात समझ में आने का क्या मतलब है। अच्छी बात का मतलब है कि हाई इनर्जी से कनेक्ट होना। उसके शरीर की बॉडी जो है। वो लॉ इनर्जी स्टेट पर वाइब्रेट कर रही है। तो वो हाई स्टेट इनर्जी को कैसे कनेक्ट होगा। तो हम क्या कर सकते हैं। हम उसके कल्याण की प्रार्थना कर सकते हैं। हम उस समय सहनशील हो सकते हैं। हम अपने लिए और उसके लिए भगवान से प्रार्थना कर सकते हैं। तो हम किसी भी सिचुएशन में। कहने का मतलब है। कोई भी ऐसा कर्म कर सकते हैं।

जिससे हम अपना और दूसरों का कल्याण कर सकते हैं। यही सिर्फ एक मार्ग है। इनर्जी से इनर्जी को एक्सचेंज करने का और अपनी जिंदगी में कभी कोई गलती हो भी जाए। तो भगवान से हमेशा समर्पण भाग रखने का कि भगवान मुझे इतनी शक्ति दो। तो भगवान आप को दुनिया को चलाने की शक्ति नहीं दे रहा। यह दुनिया में होने वाला कोई कर्म, कर्म नहीं है। पढ़ना-लिखना, कमाना, पैसा जमा करना यह कुछ नहीं है। यह सिर्फ एक कर्म है और कर्म एक इनर्जी का ही रूप है। तो जब हम इस रूप को अच्छे से समझ लेंगे। तो हम भगवान को समझ लेंगे कि भगवान अल्टीमेटली हमें किस-किस रूप में हमारी कैसे-कैसे हमारी मदद करते हैं। तो जब हम भगवान के समर्पण भाव में जीते चले जाते हैं। तो भगवान की शक्ति हमारे साथ लगने शुरू हो जाती है और हमारे साथ आत्मा की शक्ति बढ़ने लग जाती है। तो अपने हर कर्म को हमें भगवान मतलब अपना सर्व श्रेष्ठ समझ कर के भगवान के चरणों में रख देना चाहिए। यही सबसे सरल रास्ता है और दूसरे जो भी कुछ बुरा मिल रहा है। उसके लिए हमेशा हम उससे क्षमा मांगें। हम क्या करते हैं। हम उससे क्षमा मांगने की बजाए। दूसरा उससे उसकी ओर बुराइयां करते हैं। इससे क्या हो रहा है। नेगेटिव इनर्जी प्रॉपेगेट होती जा रही है। तो हम खुद ही अपना निर्माण कर रहे हैं। इनर्जी से हम अपना निर्माण करते हैं। उसी से अपना शरीर बनाते हैं। कैसे बनाते हैं। वो भी डिस्कस करते हैं।

अब हम यह देखते हैं कि जब हम कैसे हम इन पांच तत्त्वों को खुद ही अपने कर्मों के द्वारा डिसबैलेंस करते हैं। देखिए हम पांच तत्त्वों से मिलकर बने हैं। हमने कहा कि पानी 70 से 80% है। तो पानी का हमारे शरीर में यदि भगवान ने इतना निर्माण किया

है। तो कोई ना कोई उसका इंपॉर्टेंट रोल होगा। तो हमें गहराई से यहां पर की बात भी समझ नहीं होगी कि हर तत्त्व को हमारे शरीर में कोई बना नहीं रहा। हम हर तत्त्व को अपने शरीर में खुद ही बना रहे हैं और उसके लिए भी हम खुद ही जिम्मेदार हैं। जैसे मान लीजिए हर कर्म, हमें कर्म को ध्यान में रखना होगा। मान लीजिए हमें किसी छोटी सी बात पर गुस्सा आता है। गुस्सा आना भी क्या है। आप का शरीर, आप के शरीर की जो इनर्जी है। वो उस समय में, आप के उस इमोशन को कंट्रोल नहीं कर पा रही। तो आप का यह हो सकता है कि वो कम कंट्रोल कर पा रही है यह ज्यादा कंट्रोल कर पा रही है। इसके ऊपर डिपेंड करेगा कि आप के गुस्से की फ्रीक्वेंसी क्या है। यदि आप के अंदर कंट्रोल मेकैनिज्म अच्छा है। तो आप बहुत बड़ी बात पर बहुत कम गुस्सा करेंगे। यदि आप की कंट्रोलिंग मेकैनिज्म शरीर का ऐसा है कि आप को जरा सी बात पर गुस्सा आता है। तो इसका मतलब आपके शरीर की इनर्जी अब आप के उस इमोशन को एक ऐसे रूप में देख रही है और रिस्पांस कर रही है कि बात तो बहुत छोटी सी है। लेकिन आप उस बात को ओवर रियक्ट कर रहे हो। तो यह किसका रूप है। आप के शरीर के अंदर पनप रहे अग्नि तत्त्व का। आप कभी देखो। हमारे अंदर पांचों तत्त्व हमारी बैलेंस स्टेट के लिए बराबर होने चाहिए। मतलब हमारी हेल्दी स्टेट के लिए यह पांचों तत्त्व बैलेंस होने चाहिए थे। लेकिन आज आप ने एक छोटी सी बात पर गुस्सा किया। एक छोटी सी बात पर जब आप ने गुस्सा किया। तो गुस्सा एक हाई इनर्जी फिल्ड तो है, नहीं। आप ने उस गुस्से के दौरान जिस-जिस पर भी गुस्सा किया। उसमें जो-जो भी चीजें आप ने यूज की। उन सबकी अपनी एक इनर्जी थी। आप ने उसी समय में, एक पूरे कर्म को करते समय, उसी समय में आप ने एक इनर्जी को एक्सचेंज किया और वो आप के शरीर का हिस्सा बन गई। दूसरी बार फिर कोई बात हुई। आपने फिर गुस्सा किया। तीसरी बार फिर कोई बात हुई। आप ने गुस्सा किया। तो आज हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे शरीर के अंदर एक ऐसा मेकैनिज्म है कि पहले तो हम उस में एक बीज डालते हैं। फिर वो बीज प्रॉपेगेट होता है और फिर वो आप का हिस्सा बन जाता है। हम कह रहे हैं। आत्मा की तीन फैकेल्टी। मन, बुद्धि और संस्कार। मन क्या है, वो बीज। मन क्या है, वाइब्रेशंस फ्रीक्वेंसी। आप ने वो जो इनर्जी एक्सचेंज की ना। उससे आप ने, बेसिकली हम हर पल क्या कर रहे हैं। जो अर्निंग है, ना हमारी। हम हर कर्म से एक वाइब्रेशन को अपने अंदर अर्न करते हैं। उस वाइब्रेशन से ही हम सबअटॉमिक पार्टिकल और फिर हम उससे पार्टिकल, और फिर हम उससे एटम और फिर हम एक बिन्ग बनते जाते हैं। यह बात ही हमें याद रखनी होगी। यही रोल है, मन का। इसलिए हर चीज आपस में एक-दूसरे से बहुत डीपली इंटरलिंकड है।

अब हम जब एक लेवल पर आते हैं। मतलब शुरू में क्या है। हमारे शरीर के अंदर ऐसे मेकैनिज्म हैं। जो इन पांचों तत्त्वों को बैलेंस करते हैं। मान लीजिए आप को एक बार गुस्सा आया। तो बॉडी के अंदर मेकैनिज्म है कि उससे आप की बॉडी में वेयर एंड टैयर हुआ होगा। वो उसे रिपेयर कर देगी। आप को दोबारा गुस्सा आया, कर देगी। लेकिन यदि आप बार-बार करते जा रहे हो। तो बॉडी भी क्या करती है। आप का रिपेयर मेकैनिज्म अनेबल हो जाता है। कुछ समय के बाद कि वो उसको कंपनसेट कर सके और वो क्यों हो जाता है। क्योंकि देखिए, गुस्सा भी क्या है। अग्नि तत्त्व का आप के शरीर में निर्माण होने लगना। अब हम इसको एक एग्जांपल से समझते हैं। मान लीजिए मैं एक पानी को गैस के ऊपर एक सेकंड के लिए रख दो। तो क्या होगा। यदि मैं उसमें एक सेकंड के बाद उंगली डालूंगी। तो शायद पानी मुझे वैसे ही लगे, जैसे मैंने रखा था। मैं 2 सेकंड के बाद डालूंगी, कुछ नहीं होगा। 3 सेकंड के बाद कुछ नहीं होगा। 5 सेकंड के बाद शायद मुझे लगने लगे। हां, पानी में कुछ हल्का सा गर्म है। फिर 10 सेकंड के बाद लगेगा। हां, थोड़ा सा गर्म है। लेकिन मैं टॉलरेट कर सकती हूं। 15 सेकंड के बाद लगेगा, 20 सेकंड के बाद लगेगा। लेकिन जैसे-जैसे समय बढ़ता जाएगा। पानी की एक ऐसी स्टेज आएगी कि मैं जब उसमें उंगली डालूंगी। मैं तुरंत निकाल लूंगी। फिर मैं ओर डालूंगी। तो कैसा लगेगा, मुझे। उंगली डालने की मेरी हिम्मत ही नहीं होगी। क्योंकि पानी अपनी वुआइलिंग स्टेट में आ गया। तो इसी तरह से आप को यह याद रखना है। जब आप अपने शरीर में बार-बार गुस्सा कर रहे हो। तो आप अपना यह कर्म कर रहे हो। कर्म क्या है, गुस्सा आप का कर्म है। आप यदि अपने इंटेलेक्ट को यूज ना करके, वो तो आप अपने शरीर के अंदर एक अग्नि तत्त्व का निर्माण कर रहे हो। यह अग्नि तत्त्व का निर्माण जिस तरह से जब आप ने कम किया। तो बॉडी ने उसे कंट्रोल कर लिया। कंपनसेट कर दिया। आप की बॉडी रिपेयर हो गई। सैल्स हेल्थी स्टेट में आ गए। आप ने फिर से किया, फिर से किया, फिर से किया। अब क्या है कि अब आप को गुस्सा करना नहीं पड़ता। आप को हर बात पर गुस्सा आता है। इसका मतलब क्योंकि जो इनर्जी, आप ने जो गुस्से के कर्म से अपने शरीर में इनर्जी संचित की ना। हमारे चारों तरफ क्या है बैसिकली, इनर्जी फील्ड्स हैं। आप को यह बात याद रखनी होगी कि जो इनर्जी बिंग्स आप बन गए ना। वो आप ने इन कर्मों से जो आप ने अपने आप को इनर्जी बिंग्स बना लिया। ऑल द टाइम आप एक कर्म तो

कर ही रहे हो। चाहे आप कुछ भी ना करोगे। तो भी आप की बॉडी इस चारों तरफ से एक इनर्जी सायकल के अंदर हमारे चारों तरफ जो यह इनर्जी पूल बना हुआ ना। इसकी टच में तो हैं ही हैं। हम कहीं भी मतलब बेक्यूम के अंदर नहीं हैं। तो ऑल द टाइम जो हमारा ऑरा है ना। इट इज ऐन कांस्टेंट एक्स चेंज ऑफ द इनर्जी विद ईच अदर। जो भी आप ने अपने अंदर इंबाइब कर लिया।

वो अब क्या होगा। उसका दूसरा रूप क्या है, प्रिपेगेशन। तो जब आप 10 बार - 20 बार गुस्सा करते हो। तो आप यह मान लेना कि वो आप का एक संस्कार ही बनेगा। संस्कार का बनना। मतलब उस इनर्जी का प्रोफिगेट होना। इसी तरह से ही कोई भी डिजीज हमारे शरीर में शुरू होती और वो अडवांस स्टेट में चली जाती है। जैसे हम किसी भी मानसिक रोगी की एक अवस्था को देखें। क्या है, तीन स्टेट हैं। एक है, इल्यूजन। एक है, हेलोसिनेशन और एक है, डेल्यूशन। अब आप यह देखो। जब इल्यूजन होता है। तो भ्रम होता है। हेलोसिनेशन उसकी ओर एडवांस स्टेट है। डेल्यूशन यह कहता है कि ओर एडवांस है कि अब आप उसको बदल नहीं सकते। तो जब आप के शरीर में आप ने गुस्से के कर्म से जिस इनर्जी को संचित किया और जो कुछ सेकंड के लिए हमने पानी को गर्म किया। तो पानी का क्या होता है। तो पानी को आप क्या देखते हो कि इंटर कन्वर्ट होकर। उसकी स्टेट बदलने लगती है। वो पानी लिक्विड से वैपर की फॉर्म में जाने लगता है। तो क्या आप को नहीं लगता। जब आप अपने शरीर के अंदर की अग्नि को बढ़ाने लगोगे। तो आप के अंदर यह जो 70 और 80% पानी है। उसका अपना स्ट्रक्चर चेंज होने लगोगा। पानी का अपना एक स्ट्रक्चर है। पानी का शरीर में अपना एक रोल है। पानी एक कैरियर का काम करता है। पानी जो है, मॉलिक्यूल्स की फोल्डिंग को कंट्रोल करता है। लेकिन पानी का यदि खुद का स्ट्रक्चर ही डिस्टोर्ट हो जाए। तो पानी क्या करेगा। वहां जब आप गैस पर पानी को गर्म करते हो। तो आप पानी को भाप बनता हुआ देखते हो। जब वो भाप बनता है। तो H और O के बीच में जो बॉन्ड एंगल होता है। वो डिफरेंट होता है। जब पानी, पानी की फॉर्म में होता है। तो H और O के बीच में बॉन्ड एंगल डिफरेंट होता है। जब आप उसी पानी को फ्रीज कर देते हो। मतलब एक शांत स्टेट में चले जाते हो। तो वो ही पानी 180 डिग्री पर होता है। एकदम उसका बॉन्ड एंगल डिफरेंट होता है। इसी तरह से आप के अंदर जो 70 से 80% पानी। तो हम सबके अंदर है। लेकिन यह जो कर्म हम हर समय कर रहे हैं। उस कर्म से जो इनर्जी हम ले रहे हैं, बेसिकली। उस इनर्जी से ही हम अलग-अलग तरह के बॉन्ड एंगल अपने बायोमोलीक्यूलिस के मतलब बॉन्ड एंगल से ही हम अपने आप को अलग-अलग कर रहे हैं। मतलब पानी तो सब में सेम है। लेकिन पानी का इलेक्ट्रॉनिक कॉन्फिगरेशन और पानी का अरेंजमेंट अलग-अलग है। जैसे मोटू सर ने अपनी स्टडिज में भी बताया। उन्होंने क्या कहा कि जो भी व्यक्ति डिप्रेसड होता है या किसी भी साइकोलॉजीकल डिजीज से होता है। तो उनका पानी का स्ट्रक्चर बहुत ही डिस्टोर्टेड होता है। तो पानी तो H<sub>2</sub>O ही था। लेकिन वो स्ट्रक्चर उसमें डिस्टोर्टेड क्यों हो गया। आज यदि किसी को प्योर गंगाजल, आज हम 10 लोगों को पिलाएंगे ना। उसके बाद 10 लोगों का अलग से, वो पानी पिलाने के बाद उनके ब्लड को यदि हम स्कैन करेंगे। तो हम यह देखेंगे कि उन 10 के अंदर पानी का स्ट्रक्चर अलग-अलग है। तो यह पानी का स्ट्रक्चर आज कोई नहीं जानता कि पानी का स्ट्रक्चर अलग क्यों हो गया। क्योंकि आप 10 लोगों के इनर्जी फील्ड अलग-अलग है। तो पानी चाहे डिवाइन भी पिला दें, हम किसी को। वो बंदा एक अलग रिसीवर है। 10 के 10 लोग जो हैं। वो आपस में अलग-अलग रिसीवर हैं। तो उन 10 के ऊपर सेम चीज का अलग-अलग इफ़ैक्ट होगा।

तो यह हमें बहुत ध्यान से समझना चाहिए कि जो कर्म हम हर समय करते हैं। तो उसी से ही हम एक इनर्जी को अपने शरीर में इम्बाइब करते हैं और उसी से ही हम अपने आप को जैसा चाहते हैं, वो बनाते जाते हैं। अब रहता है सवाल कि हम एक दूसरे से कैसे लिंकड हैं। जब हम मुंह से कुछ बोलते हैं। तो मुंह से हम किसी के लिए अच्छा बोल सकते हैं, बुरा बोल सकते हैं। हम किसी की बढ़ाई कर सकते हैं, हम किसी की बुराई कर सकते हैं। तो मुंह से कुछ बोल कर भी हम एक हाई इनर्जी फील्ड या हम एक लॉ इनर्जी फील्ड के वाइब्रेशंस को हम अर्न करते हैं। तो हमें कोई कह नहीं रहा कि हम क्या बोलें। लेकिन हम सोच-समझकर नहीं बोलते। हम लगातार घंटी-घंटी बोलते चले जाते हैं। बातें करते चले जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि यदि आप को अपनी आत्मा की इनर्जी को रोकना है। तो आप को निसंकल्प रहना चाहिए। क्योंकि आप के संकल्प, संकल्पों से ही पूरी सृष्टि बनी है। संकल्पों का महत्त्व तो हमें समझ में आना ही चाहिए। तो जब हम बिना बात के आज हम देखें। तो कितने संकल्प ऐसे जाते रहते हैं। तो हर संकल्प एक इनर्जी है। तो आप जो संकल्प अपने मुंह से बोल कर कर रहे हो। सेम वो ही इनर्जी फील्ड आप के पास आएगी। तो मुंह से बोल कर भी आपने कर्म ही किया और वो कर्म का फल आप के ही पास ही लौटकर

आएगा। किसी के पास नहीं जाएगा।

पांचवी चीज, यदि हम मान लीजिए हाथ। हम इस हाथ से कोई अच्छा या बुरा कर्म कर सकते हैं। हम इस हाथ से जो भी कर्म करते हैं। हम इससे भी एक इनर्जी को एक्सचेंज कर रहे हैं। हम इस हाथ से ऐसा कोई काम कर सकते हैं। जो किसी के कल्याण का काम हो। वो काम जो आत्मा के गुण के अंदर समाया हुआ है। जब हम इन हाथों से वो काम करेंगे। तो भगवान हमारे इन हाथों को इतना मजबूत बना देंगे कि हम सफल हो जाएंगे। इसका क्या अर्थ है कि हमने इस हाथ से काम करके एक ऐसी इनर्जी फ़िल्ड को क्रिएट किया। जिससे ओरों का कल्याण हुआ। तो हमने यदि आत्मा के स्वरूप को ध्यान रखते हुए। इन हाथों से काम किया। तो उसी समय हमने इन हाथों से कर्म करके उस हाई इनर्जी फ़िल्ड को अबजॉर्ब कर लिया और अपनी इस इनर्जी बिन्ग का एक पार्ट बना लिया।

इसी तरह से हमारे पैर। हम इन पैरों से चलकर। किसी अच्छे काम के लिए भी जा सकते हैं। किसी एक बुरे काम के लिए भी जा सकते हैं। अच्छे काम के लिए भी, बुरे काम के लिए भी। कोई ऐसा काम जो मानव कल्याण के लिए हो। कोई ऐसा काम जिसमें किसी का विनाश छुपा हो। तो हम जो भी काम करने के लिए इन पैरों का इस्तेमाल करेंगे। उन पैरों से भी हम कर्म करके एक हाई इनर्जी फ़िल्ड या एक लॉ इनर्जी फ़िल्ड को अपनी इनर्जी बिन्ग का एक हिस्सा बनाएंगे। तो हमें यहां पर यह समझना है कि हम जो कुछ भी इन मतलब आंखों से देख कर, कानों से सुन कर, मुंह से बोल कर, हाथों से कर्म करके, पैरों से कर्म करके। हम जो कुछ भी कर रहे हैं। हर पल, हर प्रतिपल। वो हम इस इनर्जी फॉर्म का, अपनी जो हमारी ह्यूमन बॉडी है। उसका हम एक पार्ट बना रहे हैं। हम ओरिजनली क्या हैं। एक इनर्जी बिन्ग हैं।

एक बहुत इंपॉर्टेंट, एक ओर चीज, खाना - भोजन। देखिए हम बिना खाए पिए तो नहीं रह सकते। तो हमारे पास एक चॉइस यह भी है कि हम जो कुछ भी खाते हैं। खाते समय भी जो खाना हमने खाया। वो भी एक कर्म ही है। यदि इसे हम ध्यान से देखें। देखिए एक खाना वो है। जो हमारे शरीर के अंदर, हमारे अंदर एक पॉजिटिव उर्जा का संचार करता है। एक खाना वो है, जो हमारे शरीर के अंदर टॉक्सिन को जनरेट करता है। तो खाना हमने कौन सा खाया। यह खाकर भी हमने कर्म ही किया। क्योंकि जो भी खाना आप ने खाया। वो खाना ही आप के शरीर को बिल्ड करने वाला है। अच्छा, एक चीज ओर भी समझनी चाहिए। जो भी खाना हमारे पास है। उसकी भी अपनी एक इनर्जी है। वो भी एक फॉर्म है और हम भी एक इनर्जी के फॉर्म हैं। जिसका राइट प्रोपोषण क्या है। पांचों तत्त्वों का बैलेंस प्रोपोषण। जब हम कोई भी एक हेल्दी फूड खाते हैं। हेल्दी फूड मतलब एक रॉ फूड। एक ऐसा फूड, जिसके अंदर जो ऊर्जा से भरा है। जिसके अंदर खुद ही जल, अग्नि, वायु। यह पांचों तत्त्व एक बैलेंस स्टेट के अंदर हैं। तो हम बेसिकली एक फूड नहीं खाते या वो हम फ्रूट और वेजिटेबल को नहीं खाते। हम एक इनर्जी को ही कंज्यूम करते हैं। जब हम उसी सीमिलर इनर्जी को कंज्यूम करते हैं। जो हमारे इस इनर्जी बिन्ग का राइट प्रोपोषण है। तो हम क्या होते हैं। हेल्दी होते हैं। हेल्दी किस रिस्पेक्ट में, हेल्दी विद् रिस्पेक्ट टू द PH, हमारे सैल को काम करने के लिए एक होमियोस्टैसिस की जरूरत है। जैसे टेम्परेचर चाहिए। उसे PH चाहिए। ताकि सैल का एक वॉल्यूम मेंटेन होता है। तो जब हम इन पांच प्रोपोषण से इन चीजों को खाते हैं। तो हमारे सैल के अंदर जब हमारा मेटाबोलाइट बनते हैं या मेटाबॉलिज्म होता है। जिससे हमें, वो पाथ हुई। जिससे हमें इनर्जी मिलती है। तो हमारे शरीर के अंदर एक ऐसा इनबिल्ट मेकैनिज्म है कि वो हमें एक ऐसी ऊर्जा प्रदान करता है। जिससे हम एक्टिव, फिट और हेल्दी रहते हैं।

एक दूसरा फूड है। अच्छा वो भी फूड है। तो फूड को भी यदि हम डिटेल में देखें। तो वो भी एक एलिमेंट्स से मिलकर बना है। उसके एलिमेंट के मूल में भी एटम है। एटम के मूल में भी सबअटॉमिक पार्टिकल्स हैं। तो इसलिए हर फूड की अपनी एक इनर्जी अलग-अलग है। एक फ्रूट है, जो पेड़ पर लगा है। एक फ्रूट है, जो बड़ी मंडी में है। एक फ्रूट है, जो छोटी मंडी में है। एक फ्रूट है, जो आप के घर में है और फ्रिज में कई दिन से रखा है। एक फ्रूट है, जिसको आप ने प्रोसेस कर दिया। आप ने उसको

पीकल बना लिया या कोई चटनी बना ली और आप ने रख दिया। तो आप यदि एक ही फ्रूट की इनर्जी लेवल को कंपेयर करोगे ना। तो देयर इज ह्यूज डिफरेंस इन द इनर्जी। जिस तरह आप समय के साथ-साथ ओल्ड हो रहे हैं। उसी तरह से हर फूड की अपनी इनर्जी भी डिक्लाइन हो रही है और जिस फ्रूट की इनर्जी अपने एक ओरिजिनल स्वरूप में है मतलब वो अपनी हाई इनर्जी स्टेट में है। जब आप कोई भी प्रोसेस्ड फूड, जो आज की दुनिया खा रही है। वो क्या है, प्रोसेस्ड फूड और प्रोडक्ट्स हैं। वो क्या हैं। वो ऑलरेडी लॉ इनर्जी प्रोडक्ट्स हैं। तो जब आप अपने अंदर किसी लॉ इनर्जी प्रोडक्ट्स को खाते हो। तो आप क्या समझते हो। हैप्पी और हेल्दी रहोगे, कभी। लॉ इनर्जी, फूड खाने के बाद आप का शरीर हेल्दी और एक्टिव हो सकता है। कभी हो ही नहीं सकता। तो यहां पर जो फूड हम खाते हैं। उससे हमारे शरीर का निर्माण हो रहा है। तो यह भी एक कर्म है। तो हमने कौन सा फूड खाया। वो फूड खाया। जिससे हमारा शरीर हेल्दी हो। हमने अच्छा कर्म किया या वो फूड खाया। जिससे हमने अपने शरीर में टॉक्सिन का निर्माण किया। एक फूड वो है। जो हमारे शरीर से टॉक्सिन्स को रिमूव करता है। एक फूड वो है। जो हमारे शरीर से टॉक्सिन्स को क्रिएट करता है। यह बात भी आप को ध्यान रखनी है। तो इन सब चीजों से जो हमने कर्म किया। तो हम एक इनर्जी के बिंग बन गए।

अब रही सोच। मुझे ऐसा लगता है कि सोच कुछ नहीं है। सोच क्या है कि अब हम जो इनर्जी बिंग बन गए। वो डिसाइड करेगी कि हम अच्छा सोचें या हम बुरा सोचें। तो हमारी सोच कोई नहीं बना रहा। हमारी सोच हम खुद ही बना रहे हैं। हमारे ब्रेन के अंदर नर्वस सैल्स तो जरूर हैं। उस नर्वस सैल्स का अपना एक स्ट्रक्चर जरूर है। लेकिन वो नर्वस सैल्स सब में एक जैसे होते हुए भी हरेक इंसान का दिमाग अलग-अलग है। तो हम यहां पर यह भी कह सकते हैं कि इंटेलिजेंस को यदि हम बहुत डीपर लेवल पर समझें। तो इंटेलिजेंस इज नथिंग। इंटेलिजेंस में क्या है कि नर्वस सैल्स तो हैं, ब्रेन के अंदर। एक पार्टिकुलर पोर्शन भी है। जो आप के शरीर में इंटेलिजेंस को, आप के वर्किंग कैपेबिलिटी को, आप की क्रिएटिविटी को, आप के इंटेलेक्ट को इन सब को रेगुलेट तो करता है। लेकिन जितना हेल्दी, हमें यह कहना चाहिए कि हर नर्वस सैल्स के चारों ओर एक बेसिकली एक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक ग्रेडियंट होता है। पॉजिटिव और नेगेटिव चार्ज। क्योंकि जो मैग्नेट होती है। नर्वस सैल्स के चारों ओर वो होती है, सेमीपरमेविल मैग्नेट और उसके चारों ओर एक इलेक्ट्रिक ग्रेडियंट होता है। पॉजिटिव और नेगेटिव चार्जिस। क्योंकि आयन्स चैनल्स होते हैं। अब यह जो आयन्स चैनल्स हैं। यह डिसाइड करते हैं या यह इलेक्ट्रिकल ग्रेडियंट यह डिसाइड करता है कि हमारे शरीर में न्यूरो ट्रांसमीटर्स हैं, न्यूरो पेप्टाइड्स हैं, हमारे ब्रेन में। यह कौन सा, मतलब यह इलेक्ट्रिकल ग्रेडियंट का पूल ही डिसाइड करता है कि वो उस इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी पर हमारे ब्रेन में कौन सा न्यूरोट्रांसमीटर कितने अमाउंट में रिलीज होगा। तो हम सबके अंदर यदि हम आज किसी एक ऐसे बहुत हाई या जैसे रोबोटाइनस जितने भी बड़े-बड़े साइंटिस्ट हैं। हम किसी को भी देखें या किसी संत को देखें या किसी एक टेरेरिस्ट को देखें। हम सब की केमिकल प्रोफाइलिंग करेंगे ना ब्रेन की। तो सबकी अलग-अलग होगी। तो ब्रेन तो सब में सेम था। सब के अंदर एक ही पोजीशन में था। सबके अंदर नर्वस सैल्स का स्ट्रक्चर एक था। सबकी ब्रेन प्रोफाइलिंग अलग क्यों है। क्योंकि उन सबके अंदर इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी अलग-अलग है। वो इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी भी कैसे अलग-अलग हुई। अगेन वो ही बात आ जाती है कि सबटल लेवल पर हमारी जो इनर्जी है। वो एक दूसरे से नर्वस सैल्स के अंदर अलग-अलग है और यह जो नर्वस सैल्स के अंदर यह इलेक्ट्रोमैग्नेटिक ग्रेडियंट बन गया ना। यह हमारे शरीर के अंदर डिफरेंट कॉन्सेन्ट्रेशन ऑफ न्यूरो ट्रांसमीटर्स बना रहा है। जिससे हमारा इंटेलेक्ट क्रिएट हो रहा है। तो बेसिकली हमें कोई इंटेलेक्ट, हमें अलग से किसी ने लेकर नहीं भेजा। हम अपना इंटेलेक्ट खुद ही बना रहे हैं और जितना हम अपने आत्मस्वरूप के अंदर जागृत होते जाएंगे। उतनी ही हमारी बुद्धि अपने आप ही निर्मल और पवित्र होती चली जाएगी। तो हम सभी जानी हैं। हम सभी जानी हैं, एक तरह से। हम सब के पास ही ज्ञान है। लेकिन हमें बस उस ज्ञान को इमर्ज करना होगा। क्योंकि हमने गुणों से अवगुणों के पाथ को अपना लिया। तो हमने अपने आप को एक हाई इनर्जी बिंग से यदि एक लॉ इनर्जी बिंग को बना लिया। लॉ इनर्जी बिंग से एक हाई इनर्जी बिंग बनाना है। जितना हम अपने आप को हाई इनर्जी बिंग बनाते चले जाएंगे। यह एक ऐसा इनर्जी का मकैनिज्म है। जिससे डोर आप के लिए अपने आप स्वतः ही खुलते चले जाएंगे। अपने आप ही खुलते चले जाएंगे। क्योंकि एक चीज एक दूसरे के साथ रिलेटेड है। जैसे मुझे ऐसा लगता है, कई बार सोचने पर। जैसे हम कहते हैं ना। जब हम भगवान से जुड़ते हैं। तो पहले हम कहते हैं भक्ति, फिर हम कहते हैं ज्ञान। यह सब क्या हैं। यह सब भी इनर्जी की स्टेटस है। लेकिन कई बार हम, एक दिन मैं ऐसे ही सोच रही थी कि कई बार हम जाने अनजाने में कुछ गलतियां करते हैं और हम उसको अहसास नहीं करते। हमारे अंदर एक टेन्डेंसी है। जब हमें कुछ बहुत अच्छा मिल जाता है ना। तो हम उसी के पीछे बहुत आकर्षित हो जाते हैं और पीछे जो हमारे को मिला। उसको हम भूल जाते हैं। मैं

किसी की भावना को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं कह रही। एक माइंड में आया कि हमें कोई भी कर्म करते समय बहुत ही ध्यान से कर्म करना चाहिए। हम कहते हैं ना, लव एंड ग्रिटीट्यूड। तो हमें क्या है, लव और ग्रिटीट्यूड। ग्रिटीट्यूड मतलब अभार। हमें हर चीज के लिए आभारी होना है।

हमने जब से जन्म लिया और जन्म लेने के बाद हमें जो-जो भी मिला। उसके प्रति हमें एक आभार क्रिएट करना है। हमें मान लीजिए एक पर्वत की चोटी के ऊपर पहुंचना है। पर्वत की चोटी हमारा आत्मस्वरूप का स्टेट ही है और वो भगवान की प्राप्ति ही है। लेकिन कभी आप बहुत ध्यान से सोचना कि क्या आप पर्वत की चोटी पर पहुंच सकते थे। नहीं, पहुंच सकते थे। आप को हर उस रास्ते में छोटा-बड़ा जो भी आया। उसका सहारा लेकर आप उस चोटी तक पहुंचे। तो क्या आप को नहीं लगता कि अपने उस व्यवहार के अंदर, हमें यह पता होना चाहिए कि यदि वो छोटी-छोटी चीजें हमें बीच-बीच में नहीं मिलतीं। तो क्या हम पर्वत पर पहुंच पाते। नहीं, पहुंच पाते। तो जब कोई भी इंसान के पास भी एक स्टेसीस हैं। एक है, जो भगवान को मानता ही नहीं है। वो पूरा नास्तिक है। उसका तो पाथ ही अलग है। दूसरा है, जो भगवान से जुड़ा। लेकिन वो भक्ति से जुड़ा। तो, जुड़ा तो। फिर भक्ति को अपनी ओर प्रगाढ़ करता चला गया। तो भक्ति मार्ग में आता गया। जैसे-जैसे उसकी भक्ति मेचयोर होती चली गई। तो हम एक तरफ क्या कहते हैं कि भक्ति का ही रूप क्या है, ज्ञान है। तो जब उसकी भक्ति प्योर हो गई। तब उसे ज्ञान मिलने लगा। इसी तरह से क्या है। मुझे लगता है कि ज्ञान अपने आप में बिल्कुल ही परिपक्व स्टेज में चला जाएगा। तो वो तीसरी इनर्जी की स्टेज में चला जाएगा। वो है, वैराग्य। तो वैराग्य कोई ऐसी चीज नहीं है। जो आप को कहीं से मिल जाएगी या कोई आप को आशीर्वाद में दे देगा। वैराग्य भी आप के शरीर की वो इनर्जी स्टेज है। जो आप अपने अंदर ही अर्न करोगे। ज्ञान को जब आप अपनी आत्मा के अंदर उतारते चले जाओगे। तो वो ज्ञान आप को, जब आप सच जान लोगे कि आप ओरिजनली क्या हो। तो आप को खुद ही वैराग्य आ जाएगा कि मैं कर क्या रहा हूं। मुझे क्या करना चाहिए। तो वो वैराग्य आप को चीजों से डिटेच कर देगा। आप ने इंटेलेक्ट से यह जाना कि यह सच है। अब आप को यह चूज करना है। आप को इस सच में किस राह पर जाना चाहते हो। तो ज्ञान आप की आंखें खोलता है कि यह आप का पाथ है। यह इस दुनिया की और आप की यह रियालिटी है। अब आप को डिसाइड करना है आप को इस दुनिया की रास्ते पर जाना है। माया से जुड़ना है। इसी सायकल में बार बार आना है या इससे आप को मुक्त होना है। तो यह है, वैराग्य। तो वैराग्य क्या हुआ कि ज्ञान आने के बाद भगवान आप को एक रास्ता दिखाते हैं और वो ऑटोमेटिकली वैराग्य मतलब एक हाई इनर्जी स्टेज में आप इंटर कन्वर्ट हो जाओगे। तो कई बार मैंने, बहुत से भाई बहनों को सुना। तो वो कहते हैं, भक्ति मार्ग। तो वो क्या, महसूस होता है। जब भी कभी मैंने सुना कि वो भक्ति मार्ग को बड़े गल्ट दृष्टि से देखते हैं। आज हमें ज्ञान मिला। तो इसका मतलब यह तो नहीं है कि हम भक्ति को अलग से देखने लगे। क्यों देखने लगे। यदि वो भक्ति ना होती। तो हमें ज्ञान ही नहीं मिलता। हम शुरू से ही ज्ञानी नहीं हो सकते। एक इनर्जी स्टेज, दूसरी इनर्जी स्टेज में रूपांतरित होती है। तो हमें कभी भी नहीं सोचना चाहिए। हमें हर उस चीज के लिए धन्यवाद देना चाहिए। जो हमें, जिस रूप में भी मिली और हम, जिस रूप में भी आज यहां तक आ सके और इन सब चीजों को समझ सके। तो यह क्या है कि एक ऐसे कर्म है कि जो हम अननोइंगली देख कर, सुन कर, बोल कर, हाथों से कर्म कर। हर समय में मतलब हमें यह याद रखना है कि हम इनर्जी को, हर मोमेंट, हर पल एक्सचेंज कर रहे हैं और हम एक अलग सबअटॉमिक बिंग बन रहे हैं। आज मैं इस मोमेंट में जो हूं। वो मेरा एक इनर्जी स्टेज डिफरेंट है। मैं एक सेकंड के बाद हमें याद रखना होगा कि मैं दूसरी सरिका हूं। मैं एक दूसरा इनर्जी स्टेज है। मैं उसके अगले मोमेंट पर तीसरा इनर्जी स्टेज है। इसी तरह से हम सबअटॉमिक बिंग्स हैं और हमारी रियलिटी हर सेकंड बदलती चली जा रही है और हम खुद ही अपने हाथों से एक अलग मतलब जो इनर्जी हम अर्न कर रहे हैं। वो इनर्जी हमें आगे अलग-अलग रूपों में मिलती जा रही है। परमशान्ति...